भारत – लेबनान संबंध

1954 में राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से परंपरागत रूप से भारत और लेबनान के बीच संबंध मधुर हैं। साझी समानताओं के तहत लिखित संविधान के आधार पर लोकतांत्रिक, संसदीय शासन पद्धति शामिल है जो कानून के शासन, कतिपय बुनियादी स्वतंत्रता तथा मानवाधिकारों जैसे कि अभिव्यक्ति की आजादी की गारंटी देती है। दोनों देशों की बाजार अर्थव्यवस्था अधिक उदारीकरण की ओर बढ़ रही है। दोनों देशों में शिक्षित लोगों का विशाल समुदाय तथा एक जीवंत उद्यमी वर्ग है।

यह तथ्य कि भारत ने बेरूत में अपने दूतावास को गृह युद्ध की पूरी अवधि के दौरान खुला रखा और यह काम करता रहा (1975 से 1990, 5 अगस्त से 16 अक्टूबर, 1989 तक संक्षिप्त अवधि के लिए इसे बंद किया गया), जबकि बेरूत में स्थित अन्य अधिकतर विदेशी दूतावास बंद हो गए थे, लेबनान के लोगों द्वारा इसकी सराहना की जाती है और साथ ही अरब जगत के साथ परंपरागत रूप से भारत के मजबूत संबंधों, फिलीस्तीन उद्देश्य के लिए भारत के समर्थन तथा अभी हाल ही में सीरिया सहित अरब स्प्रिंग डवलपमेंट पर हमारे संतुलित एवं अंशांकित दृष्टिकोण की सराहना की जाती है। दोनों देशों ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थाई सदस्य के रूप में 2010 में अपने ओवरलैप के दौरान आपसी हित के विभिन्न मुद्दों पर आपस में बहुत निकटता से सहयोग किया है।
लेबनान के अधिकारियों एवं राजनीतिक प्रतिनिधियों ने परंपरागत रूप से दक्षिण लेबनान में यू एन आई एफ आई एल बलों में तैनात भारतीय सैनिकों की प्रतिबद्धता एवं पेशेवर उत्कृष्टता की सराहना की है तथा दक्षिण लेबनान के गांवों में यू एन एफ आई एल दल के भारतीय डाक्टरों एवं पशुचिकित्सा द्वारा प्रदान की जा रही चिकित्सा देखरेख एवं नि:शुल्क दवाओं के बारे में लेबनान की मीडिया में सकारात्मक रिपोर्टें छपी हैं।

जन दर जन संपर्क मधुर एवं सौहार्दपूर्ण हैं तथा बालीवुड इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और भारत की घटनाओं पर लेबनान की मीडिया नियमित रूप से खबर छापती है।

तथापि, भारत के लिए लेबनान महत्वपूर्ण सामरिक साझेदार नहीं रहा है और द्विपक्षीय अंत:क्रिया का विकास वर्षों से लेबनान में चल रहे घरेलू एवं क्षेत्रीय संकटों की वजह से यह और सीमित हुआ है जिसकी शुरूआत 1975 में गृह युद्ध भड़कने से हुई थी। लेबनान के अपतटीय गैस एवं तेल भंडारों के अन्वेषण में भारत की भागीदारी की संभावना से यह स्थिति बदल सकती है। इस क्षेत्र में, विशेष रूप से सीरिया एवं इराक में बढ़ती अस्थिरता की वजह से स्वयं लेबनान को नए बाजारों एवं आर्थिक सहयोग के लिए साझेदारों को ढूंढने की आवश्यकता है। विकास सहायता प्रदान करके तथा अवसंरचना, विद्युत एवं वैकल्पिक ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं कृषि जैसे क्षेत्रों में अपनी भागीदारी में वृद्धि करके इस देश में अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए भारत के लिए संभावनाएं मौजूद हैं।

राजनीतिक अंत:क्रिया

लेबनान की ओर से यात्राएं : नई दिल्ली में नाम शिखर बैठक के लिए 1997 में विदेश मंत्री फेयर्ज बोइज की भारत यात्रा के बाद लेबनान की ओर से उच्च स्तर पर अगली यात्रा फरवरी 2015 में उस समय हुई थी जब लेबनान के कृषि मंत्री अकरम चेहायेब ने अपने समकक्ष के निमंत्रण पर दिल्ली का दौरा किया तथा सूरजकुंड मेले में लेबनान के मंडप का उद्घाटन भी किया जहां लेबनान साझेदार देश था।

भारत की ओर से यात्रांए : विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 28 सितंबर से 1 अक्टूबर, 2005 के दौरान लेबनान का दौरा किया। प्रधानमंत्री के विशेष दूत श्री सी आर गरेखान ने इजरायल के साथ जुलाई, 2006 के संघर्ष की पृष्ठभूमि में लेबनान द्वारा अपेक्षित राहत सामग्री ले जाने वाले आई ए एफ प्लेन के साथ जुलाई, 2206 में बेरूत का दौरा किया। रक्षा राज्य मंत्री श्री एम एम पल्लमराजू ने रक्षा मंत्रालय के एक शिष्टमंडल के साथ यू एन आई एफ आई एल में इंडबैट के सिलसिले में 10 - 12 सितंबर, 2008 के दौरान दक्षिण लेबनान का दौरा किया। विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने

पुन: 30 जून, से 2 जुलाई, 2013 के दौरान लेबनान का दौरा किया। सचिव (पश्चिम) श्री अनिल वाधवा ने 27 से 30 मार्च, 2014 के दौरान लेबनान का दौरा किया।

संसदीय मैत्री समिति : विभिन्न राजनीतिक / धार्मिक समूहों से 12 सदस्यों का चयन करके अप्रैल, 2006 में एक लेबनान – भारत संसदीय मैत्री समिति का गठन किया गया। लोक सभा सचिवालय से 16वीं लोक सभा में एक समकक्ष समिति का गठन करने का अनुरोध किया गया है।

लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल में शांति स्थापना – इंडबैट (यू एन आई एफ आई एल) : नवंबर, 1998 से यू एन आई एफ आई एल में एक भारतीय बटालियन (इंडबैट) को तैनात किया गया है। इस समय इस बटालियन में 4 डाक्टरों तथा 1 नर्सिंग स्टाफ अधिकारी सहित 860 रक्षा कार्मिक शामिल हैं जो सीरिया के साथ तिराहे पर इजराइल के साथ लेबनान के दक्षिणी सीमा के सबसे पूर्वी क्षेत्र में तैनात हैं। इसके अलावा 21 सदस्यीय चिकित्सा टीम के साथ 16 भारतीय रक्षा कार्मिक (जिसमें डिप्टी फोर्स कमांडर शामिल हैं) यू एन आई एफ आई एल मुख्यालय, नकोरा में तैनात हैं।

द्विपक्षीय करार / एम ओ यू एक सांस्कृतिक विनिमय करार है जिस पर अप्रैल, 1997 में हस्ताक्षर किया गया और फरवरी, 2000 में पुष्टि की गई, जिसे अपने आप हर पांच साल बाद नवीकृत किया जाता है और इसलिए आज भी वैध है तथा एक शैक्षिक विनिमय कार्यक्रम है जिस पर जून, 2013 में हस्ताक्षर किया गया था तथा यह पांच साल के लिए वैध है जिसे हर पांच साल में स्वत: ही नवीकृत किया जाएगा।

विचाराधीन करार / एम ओ यू : कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग के लिए प्रारूप एम ओ यू, नियमित विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओ सी) के आयोजन के लिए एम ओ यू तथा भारत के व्यवसायियों एवं पर्यटकों को शीघ्रता से लेबनानी वीजा जारी करने के लिए एम ओ यू तथा द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण (बी आई पी पी ए) पर प्रारूप करार, पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग के लिए प्रारूप करार, सजायाफ्ता व्यक्तियों के हस्तांतरण, प्रत्यर्पण, परस्पर एवं कानूनी सहायता तथा न्यायिक सहयोग के लिए प्रारूप करार विचाराधीन हैं।

भारत की ओर से राहत एवं पुनर्वास सहायता :

लेबनान पर इजरायल की ओर से 34 दिन की बमबारी के बाद पुनर्निर्माण के लिए मानवीय सहायता के जुलाई, 2006 में 10 करोड़ रूपए की सहायता की घोषणा की गई तथा इस प्रतिबद्धता के विरूद्ध लगभग 45 लाख रूपए मूल्य के कंबल, तंबू एवं दवाएं प्रदान की गई। अक्टूबर, 2007 में, उत्तरी लेबनान में फिलीस्तीन शरणार्थी शिविरों के पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण के लिए 600,000 अमरीकी डालर की प्रतिबद्धता की गई परंतु इस प्रतिबद्धता के विरूद्ध कोई संवितरण नहीं किया गया है। लेबनान को विकास सहायता प्रदान करने के लिए प्रस्ताव इस समय भारत सरकार के विचाराधीन हैं जिसमें लेबनान में एक प्रायोगिक सोलर या विंड ऊर्जा प्लांट स्थापित करने की परियोजना शामिल है। 2013, 2014 एवं 2015 में भारत ने लेबनान की आपातकालीन प्रत्युत्तर निधि में आधे मिलियन अमरीकी डालर की राशि प्रदान की।

आर्थिक अंत:क्रिया :

व्यापार संबंधों का विकास : भारत – लेबनान व्यापार, जो गृह युद्ध के दौरान वस्तुत: अवरूद्ध हो गया था, हाल के वर्षों में बढ़ा है। 1993 में 13.60 मिलियन अमरीकी डालर और 1999 में 55 मिलियन अमरीकी डालर से दोतरफा द्विपक्षीय व्यापार 2012 के दौरान 370 मिलियन अमरीकी डालर के आसपास था तथा यह 2014 में और बढ़कर 429.78 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया। 2014 में लेबनान को भारतीय निर्यात का मूल्य 406.13 मिलियन अमरीकी डालर था तथा व्यापार संतुलन प्रभावी रूप से भारत के पक्ष में है। जनवरी से अक्टूबर 2015 की अवधि में

द्विपक्षीय व्यापार का मूल्य 293.97 मिलियन अमरीकी डालर था जिसमें लेबनान को भारतीय निर्यात का मूल्य 276.36 मिलियन अमरीकी डालर तथा भारत का मूल्य 17.61 मिलियन अमरीकी डालर था। इसके अलावा, अफ्रीका, लैटिन अमरीका एवं मध्य पूर्व को निर्यात के लिए लेबनान की कंपनियों द्वारा भारत में अनेक उत्पादों को मंगाया जा रहा है।

भारत की ओर से निर्यात की प्रमुख वस्तुओं में डायमंड, मोटर कार, आटो पार्ट्स, भेषज पदार्थ, चालव आदि शामिल हैं, जबकि लेबनान भारत को एल्युमिनियम तथा कॉपर वेस्ट एवं स्क्रैप, टैंड या क्रस्ट हाइड एवं स्किन का निर्यात करता है। भेषज पदार्थ, टेक्सटाइल, डिजाइनर फैशन एवं साजो-सामान, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा, उर्वरक, रसायन, कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद, आटो स्पयेर पार्ट्स, निर्माण, खनन एवं विद्युत उपकरण के संबंध में भारतीय निर्यात का विस्तार करने की प्रबल संभावनाएं हैं। लेबनान से भारत ओलिव आयल एवं शराब का आयात कर सकता है।

निवेश संबंध : ऊर्जा क्षेत्र में तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं अवसंरचना के क्षेत्रों में लेबनान में भारतीय निवेश की बहुत संभावनाएं हैं। लेबनान की दो कंपनियों ने सेवा क्षेत्र में भारत में अपना आपरेशन स्थापित किया है। अफ्रीका में तथा इस क्षेत्र में निर्माण की गतिविधियों में भारत और लेबनान की कंपनियों के बीच संयुक्त उद्यम की भी संभावनाएं हैं।

व्यवसाय दर व्यवसाय दर संपर्क : 2014 में, भारतीय निर्यात संगठन परिसंघ (एफ आई ई ओ) से एक 15 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 28 से 31 मई, 2014 के दौरान लेबनान का दौरा किया तथा चेंबर्स आफ कॉमर्स आफ इंडस्ट्रीज एंड एग्रीकल्चर ऑफ सैदा एंड साउथ लेबनान (सी सी आई ए एस) के साथ सहयोग के लिए एक एम ओ पर हस्ताक्षर किया। लेबनान के कृषि मंत्री के नेतृत्व में एक कारोबारी शिष्टमंडल ने 5-6 फरवरी, 2015 को भारत का दौरा किया। नवंबर 2015 में लेबनान के टूर आपरेटरों के समूह ने केरल का दौरा किया जिसे जी ओ आई आर टी ओ द्वारा प्रायोजित किया गया था।

लेबनान के हाइड्रो कार्बन क्षेत्र में भारतीय भागीदारी की शुरूआत दो भारतीय कंपनियों – ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (ओ वी एल) और कैर्न इंडिया के साथ हुई – जिन्होंने लेबनान सरकार द्वारा शुरू किए गए अपतटीय प्राकृतिक गैस के पहले चक्र में भाग लेने के लिए 34 अन्य कंपनियों के साथ गैर-आपरेटर के रूप में पूर्व अर्हता प्राप्त की है। उन्होंने अब एक कंसोर्टियम को ज्वाइन किया है जो अगले चरण अर्थात विशिष्ट ब्लाकों के लिए बोली में भाग लेने के लिए 12 कंपनियों में से कम से कम कंपनी को शामिल करेगा जिन्होंने आपरेटर के रूप से पूर्व अर्हता प्राप्त की है। तथापि आवश्यक कानून पारित करने में लेबनान सरकार की ओर से विलंब के कारण यह परियोजना अटकी हुई है।

सांस्कृतिक अंत:क्रिया :

अक्टूबर 2014 में पहली बार भारत और लेबनान के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम को सक्रिय किया गया (जिसकी 2000 में अभिपुष्टि की गई थी) तथा सी ई पी की शर्तों के अधीन आई सी सी आर द्वारा सोनम कालरा की सूफी गास्पेल परियोजना लेबनान भेजी गई। दूतावास द्वारा अलग से बेरूत, सैदा एवं तायरे में गुरूकुल दुबई द्वारा फ्यूजन कथक एवं बालीवुड शो का आयोजन किया गया। बेरूत एवं त्रिपोली में भारतीय साड़ियों तथा इस्लामी वास्तुशिल्प के फोटोग्राफ की प्रदर्शनी भी लगाई गई। दूतावास द्वारा वर्ष के दौरान तीन स्थानीय प्रदर्शनियों में भारतीय हस्तशिल्प की प्रस्तुति का भी आयोजन किया गया जिसमें बेरुतिया प्रदर्शनी में रामडैनी, भारतीय हस्तशिल्प एवं कास्ट्यूम ज्वैलरी की प्रस्तुति के साथ दस्तकारी प्रदर्शनी और फोरम डी बेरुत की आर्ट आफ लिविंग प्रदर्शनी शामिल हैं। दबायेह, बेरुत में ला रॉयल होटल में जून 2014 में पहला भारतीय खाद्य महोत्सव आयोजित किया गया। दूतावास ने अक्टूबर 2014 में ''दि लाइट ऑफ एशिया'' तथा डाक्यूमेंटरी फिल्म ''पावरलेस'' (कटियाबाज) की स्क्रीनिंग में सहायता करके कल्चरल रजिस्टेंस इंटरनेशनल फेस्टिवल में भी भाग लिया।

जनवरी 2015 में कई वर्षों में पहली बार, दूतावास लेबनान के दो प्रमुख अरबी अखबारों – अन-नाहर और अस-सफिर में गणतंत्र दिवस के अवसर पर विशेष सप्लीमेंट का वितरण करेगा।

लेबनान ने 1 फरवरी से 15 फरवरी के दौरान सूरजकुंड मेला – 2015 में साझेदार देश के रूप में भाग लिया। बेरुत, सैदा और टियरे में मणिपुरी नृत्य के परफार्मेंस देने के लिए सुश्री नर्बदा देवी एण्ड ग्रुप ने 1 से 5 अप्रैल के दौरान लेबनान का दौरा किया। नोरी आर्ट एण्ड पपेटरी सेंटर के एक ग्रुप ने 22 से 26 अप्रैल के दौरान लेबनान का दौरा किया तथा 5 परफार्मेंस दिए जिसमें साडनेयल सीरियन रिफ्यूजी कैंप, बेरसफ में एस ओ एस चिल्ड्रेन विलेज तथा जाहले में ओरिएंटल स्कूल में शो शामिल थे। ग्रुप ने शिक्षकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए तीन कार्यशालाओं का भी आयोजन किया। जून 2015 में ली रॉयल होटल में गाला इंडियन नाइट का आयोजन किया गया।

21 जून को दूतावास ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया तथा पूरे देश में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दूतावास द्वारा इनमें से दो कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें पहला कार्यक्रम बेरुत के अमेरिकन विश्वविद्यालय के साथ मिलकर कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों की एक श्रृंखला का आयोजन करना है। दूसरा कार्यक्रम बेरुत में स्टेशन नामक एक सांस्कृतिक केन्द्र में आयोजित किया गया जिसमें गतिविधियों के समग्र कार्यक्रम को प्रस्तुत किया गया जिसमें फोटो प्रदर्शनी तथा योग सत्र और एक खाफ एवं दस्तकारी बाजार शामिल थे।

दूतावास में दूसरी बार 1 से 4 जुलाई 2015 के दौरान बुरुतिया में आयोजित रामदनिय में भाग लिया तथा एक स्टाल लगाया जिसमें भारतीय टेक्सटाइल, कास्ट्यूम ज्वैलरी तथा दस्तकारी का प्रदर्शन किया गया और 2 से 6 सितंबर के दौरान सिडोन में ला सेले प्रदर्शनी में एक फैशन शो तथा 25 से 29 नवंबर 2015 के दौरान फोरम डी बेरुत में आर्ट ऑफ लिविंग प्रदर्शनी में भाग लिया तथा एक भारतीय मंडप लगाया जिसमें बजाज पल्सर मोटर बाइक तथा बजाज आटो रिक्शा, किर्लोस्कर जनरेटर तथा वाटर पंप एवं भारत से मशीन टूल्स को भी प्रदर्शित किया गया।

दूतावास ने 22 सितंबर 2015 को ग्रैंड सिनेमा ए बी सी दबायेह में बालीवुड फिल्म ''कहानी'' की स्क्रीनिंग का भी आयोजन किया तथा 9 नवंबर 2015 को महोत्सव में अपनी फिल्म ''गैंग ऑफ वासेपुर'' की स्क्रीनिंग के लिए फिल्म मेकर अनुराग कश्यप की लेबनान यात्रा के साथ फेस्टिवल ऑफ कल्चरल रेसिस्टेंस की मदद की।

कैसिनो डु लिबान में भारतीय खाद्य महोत्सव के दूसरे संस्करण में भाग लेने के लिए दो भारतीय शेफ ने 27 सितंबर से 1 अक्टूबर 2015 के दौरान लेबनान का दौरा किया।

गांधी जयंती के अवसर पर दूतावास में लेबनान के अमेरिकी विश्वविद्यालय (एल ए यू), बेरुत के साथ मिलकर 2 अक्टूबर 2015 को एल ए यू में एक पैनल चर्चा तथा भारतीय बटालियन के सहयोग से दक्षिण लेबनान में 5 किलोमीटर की ''शांति के लिए दौड़'' का आयोजन किया।

2015 में लेबनान में आई सी सी आर की पहली पीठ स्थापित करने के लिए 12 अक्टूबर को भारतीय दूतावास तथा लेबनानी अमरीकी विश्वविद्यालय के बीच एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। पहली बार 2015 में आई सी सी आर की एक वरिष्ठ फेलोशिप लेबनानी नागरिक श्री बासम मिखाएल लाहोद को वित्त वर्ष 2016-17 के लिए प्रदान की गई है। ओ आर एफ द्वारा नई दिल्ली में 25 अक्टूबर से 3 नवंबर 2015 के दौरान वैश्विक अभिशासन पर आयोजित एशियन फोरम 2015 में श्री जियाद मिकाती लेबनान के पहले प्रतिभागी बने।

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) कार्यक्रम : 2015 के लिए भारत ने 25 सिविलियन स्लाट तथा रक्षा कार्मिकों के लिए 10 स्लाट की पेशकश की जिसमें से 27 स्लाटों (सिविलियन में 18 स्लाट तथा रक्षा कार्मिकों लिए 9 स्लाट) का उपयोग किया गया। आईटी एवं अंग्रेजी भाषा पाठ्यक्रम सबसे लोकप्रिय विषय हैं जिसके बाद लोक प्रशासन का स्थान है।

लेबनान में भारतीय समुदाय

लेबनान में भारतीय मूल के व्यक्तियों की संख्या बहुत ही कम है तथा इनमें से मुख्य रूप से महिलाएं हैं जिन्होंने लेबनान के नागरिकों से शादी कर ली है। अनिवासी भारतीय समुदाय भी छोटा है जिसमें 8000 से 10000 मजदूर हैं जो मुख्य रूप से निर्माण, सैनिटेशन, कृषि तथा कारखानों में काम करते हैं। कुछ पेशेवर भी हैं जो विभिन्न कंपनियों जैसे कि अल माजा एवं लैंडमार्क ग्रुप में प्रबंधन के पदों पर हैं, कुछ यू एन आई एफ आई एल में तथा अन्य यूएन एजेंसियों में सिविलियन पदों पर हैं, तथा दो प्रोफेसर बेरूत के अमरीकन विश्वविद्यालय तथा हैगाजियन विश्वविद्यालय में पढ़ा रहे हैं।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, बेरूत की वेबसाइट :
http://indianembassybeirut.org/
भारतीय दूतावास, बेरूत का फेसबुक लिंक :
https://www.facebook.com/indianembassybeirut
भारतीय दूतावास, बेरूत ट्विटर :
ट्विटर लिंक : India@Lebanon (@IndiainLebanon)

***

फरवरी, 2016